ओशो इंटरनेशनल मैडिटेशन रिज़ॉर्ट साक्षात्कार

साक्षात्कार

मैं मेक्सिको में पला, बढ़ा। वहां पर मैं एक कलाकार हूं, और अनुवादक का काम करता हूं। मैं एक बॉडी वर्कर भी हूं। मैं ओशो इंटरनैशनल मेडिटेशन रिज़ार्ट में पहली बार सात साल पहले आया था।

मुझे आज भी याद है वह दिन जब मैं सुबह-सुबह वैल्कम सेंटर बैठा था रजिस्ट्रेशन का इंतजार करते हुए। इस जगह की अभूतपूर्व सुंदरता से अभिभूत, चारों तरफ की हरियाली, घने पेड़ जिन पर सूरज की पहली किरणें रोशनी बरसा रही थीं। मानो मैं सपनों की दुनिया में प्रवेश कर रहा हूं। यहां का जो वातावरण है उसके लिए मैं मानसिक रूप से तैयार नहीं था।

यद्यपि ओशो की दुनिया मेरी मां के माध्यम से मेरे सामने तभी खुल गई थी जब मैं बहुत छोटा था। मां ने ओशो सक्रिय ध्यान विधियां करना शुरू किया था जब मैं तेरह साल का था। यहां आने से पहले मुझे ऐसा ही लगता था कि मैं समाज में रहने लायक नहीं हूं। मेरे न कोई दोस्त थे, न मैं किसी के साथ संबंध बना पाता था। मैं हाई स्कूल में पढ़ रहा था और अन्य मैक्सिकन लड़कों की तरह अपनी जिंदगी बना रहा था लेकिन न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता था कि जीवन में सफल होना, विवाह करना, समाज में प्रतिष्ठित होना इसके अलावा बहुत कुछ है। मैं बहुत बुद्धिमान था इसलिए परिवार की मेरे से बहुत अपेक्षाएं थीं।

यह स्थिति तब बदली जब मेरी मां कट्टर कैथोलिक होने से हटकर ओशो ध्यान विधियां करने लगी। इससे मेरे जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आया। मां के पीछे-पीछे मैं भी ओशो ध्यान करने लगा। हम मेक्सिको सिटी में ओशो ध्यान केंद्र में नियमित रूप से जाने लगे।

जब मैंने पहली बार ओशो डायनैमिक ध्यान किया तो मुझे लगा यह बिलकुल बेतुका है लेकिन हैरानी की बात यह थी मैं उसे छोड़ना नहीं चाहता था। यह मेरे लिए बेबूझ था, मेरे तार्किक मन को यह अजीब सा लगा लेकिन इस ध्यान ने मेरे अंदर इतनी खाली जगह बनाई जो मैंने पहले कभी नहीं जानी थी।

मैं यहां क्यों आया? क्योंकि सालों से मैंने लोगों को ओशो इंटरनैशनल मेडिटेशन रिज़ार्ट के बारे में बातें करते हुए सुना था कि इस जगह जाना कितना अनिवार्य है। और मुझे ऐसा लगता था कि कम से कम एक बार तो मुझे यहां आना चाहिए। लेकिन जब मैं खुद यहां आया तभी मुझे पता चला कि लोग इस स्थान के बारे में इतने दीवाने क्यों हैं। यह एक ऊर्जा क्षेत्र है जैसा कि दुनिया में कहीं नहीं है। आपके आसपास सब कुछ उत्सव मग्न है। लोग नाच रहे हैं, हंस रहे हैं, एक असली स्वर्ग की तरह। चारों ओर इतना मौन, इतना आनंद है।

मेडिटेशन रिज़ार्ट का जादू यह है कि तुम जो चाहो उसका मज़ा ले सकते हो। दुनिया के विभिन्न देशों से आये हुए अद्भुत लोगों से मिलना हो ,असली मनुष्यों से दोस्ती करनी हो या अकेले मौन होकर ध्यान करना हो, अपने भीतर डुबकी लगाना हो, स्विमिंग पुल के किनारे विश्राम करना हो या वृक्षों तले जकुज़ी में बैठना हो, आपके भीतर की प्रतिभा को अप्रत्याशित रूप से खोज लेना हो या ओशो मल्टीवर्सिटी के मजेदार कोर्सेस में भाग लेना हो सब कुछ उपलब्ध है, सब कुछ संभव है।

साथ ही, लिविंग इन कार्यक्रम का अनुभव, खास कर भीतर रहकर काम करने से मुझे इतने नए आयाम पता चले हैं कि वे वास्तव में मेरे लिए उपहार स्वरूप हैं। दरअसल मैं महसूस कर रहा हूं कि जो मुझे मिल रहा है वह उससे कहीं ज्यादा है जो मैं दे रहा हूं। यहां हर दिन स्वयं को जानने का नया अवसर होता है, अपने साथ रमने का, और इस अविश्वसनीय परिसर के

प्रति अपने आपको खोलने का। और यह भाव मैं अपने साथ वापिस ले जाऊंगा। आखिर मैं जितना इस जीवन का आनंद लूंगा उतना मुझे इस सुगंध को अपने साथ वापिस ले जाना अधिक सरल होगा।

हर बार यहां कुछ न कुछ नया होता है। ये तीन महीने गजब के थे। पिछली बार के जो अनुभव थे उससे सर्वथा अलग। रोज की जिंदगी में अधिक मौजूद रहने के लिए मैं सजगता गांठ में बांधकर ले जा रहा हूं। और कामकाज के लिए कुछ युक्तियां, कुछ गुर, कुछ आंतरिक सूझ-बूझ, और समझ साथ ले जा रहा हूं जिससे मेरा काम, मेरे संबंध सुंदर होंगे और मेरे अपने बारे में मुझे ज्यादा से ज्यादा समझ आएगी।

अंततः यहां आजीवन रहने का कोई सवाल ही नहीं है, लेकिन मुझे यह स्वीकार करने में कोई झिझक नहीं होती कि मैं ओशो मेडिटेशन रिज़ार्ट का मुरीद बन गया हूं। मैं कल्पना नहीं कर सकता कि कोई यहां आए और प्रभावित न हो। अब मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि ओशो मेडिटेशन रिज़ार्ट एक अनिवार्य स्थान है!

OSHO®
© 2014 ओशो इंटरनेशनल
कॉपीराइट & ट्रेडमार्क जानकारी